

डॉ. रोजर ग्रीन, अमेरिकी ईसाई धर्म, सत्र 18, अमेरिका में उदार धर्मशास्त्र

© 2024 रोजर ग्रीन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रोजर ग्रीन द्वारा अमेरिकी ईसाई धर्म पर दिए गए उनके व्याख्यान हैं। यह सत्र 18 है, अमेरिका में उदार धर्मशास्त्र।

मैं पाठ्यक्रम के पेज 15 पर हूँ। बस एक तरह से यह याद दिलाने के लिए कि हम कहाँ हैं। यह व्याख्यान संख्या 14 है।

हम इसे अमेरिका में उदार धर्मशास्त्र कह रहे हैं। यह आधुनिक अमेरिका 1918 से वर्तमान तक के पाठ्यक्रम का भाग 4 है। तो, व्याख्यान 14, अमेरिका में उदार धर्मशास्त्र।

मैंने जो किया वह सिर्फ़ एक अनुस्मारक था। मैंने 1865 में गृह युद्ध के अंत और 1918 में प्रथम विश्व युद्ध की शुरुआत के बीच अमेरिका में जीवन कैसा था, इसके बारे में एक परिचय दिया। तो, अमेरिकी व्यापक संस्कृति में जिस तरह का जीवन था वह एक प्रगतिशील था। इसमें कोई संदेह नहीं कि यह निश्चित रूप से कुछ लोगों के लिए एक समृद्ध जीवन था।

अमेरिकी भविष्य को लेकर बहुत आश्वस्त थे और उन्हें इस बात का भी पूरा भरोसा था कि भविष्य उनके लिए क्या लेकर आएगा। इसलिए, बहुत कुछ हो रहा है। हालाँकि, हमने यह भी बताया कि बहुत सारे बदलाव हो रहे हैं।

हमने डार्विनवाद का ज़िक्र किया, और हम इस बारे में फिर से बात करेंगे। बहुत सारे ऐतिहासिक परिवर्तन हुए, लेकिन खास तौर पर सामाजिक परिवर्तन हुए, जब लोग बड़ी संख्या में शहरों में आए, शहरों में काम करने लगे। आप इन सब से कैसे निपटते हैं? और साथ ही धर्मनिरपेक्षता भी बढ़ रही है।

तो अब उदारवाद वह है जिसे हम, वैसे, शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद कहेंगे, बस इसे एक सटीक लेबल देने के लिए। शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद अमेरिका में ईसाई धर्म के धर्मशास्त्र में सेमिनारियों, पल्पिट्स, प्रकाशनों और अन्य जगहों पर पकड़ बनाना शुरू कर देता है। तो, ठीक है।

तो, मुझे लगता है कि हम यहीं रुक गए, क्योंकि मुझे नहीं लगता कि हम नंबर बी पर रुक गए, ईसाई धर्म को बचाने के लिए तीन रणनीतियाँ। हमने वहाँ से शुरुआत नहीं की, है न? हम वहाँ तक नहीं पहुँचे, है न? ठीक है, ईसाई धर्म को बचाने के लिए तीन रणनीतियाँ। तो चलिए मैं एक त्वरित परिचय देता हूँ, और फिर हम आज सुबह इन तीनों पर नज़र डालेंगे।

ऐसा होता है कि आधुनिक दुनिया के आक्रमण और उन सभी चीज़ों के आक्रमण के साथ, जिनके बारे में हमने बात की है, बहुत से ईसाई, अच्छे इरादे वाले ईसाई, सोचते हैं कि ईसाई धर्म वास्तव

में खतरे में है। अमेरिका में ईसाई धर्म खतरे में है। यह खतरे में है, और विशेष रूप से यह खतरे में है क्योंकि इस तरह की बहुत प्रगतिशील दुनिया में ईसाई धर्म के खिलाफ़ एक बहुत ही जबरदस्त बौद्धिक हमला हुआ है जिसमें हम रह रहे हैं।

आपके पास ऐसे लोग हैं जो बाइबल के अधिकार पर संदेह करते हैं, ऐसे लोग जो चर्च के अधिकार पर संदेह करते हैं। और इसलिए, बौद्धिक रूप से, ईसाई धर्म पर हमला हो रहा है। अब, जो होता है वह यह है कि इस आंदोलन में ऐसे लोग थे जिन्हें हम शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद कहते हैं जो जो करना चाहते हैं वह यह है कि वे ईसाई धर्म को बचाना चाहते हैं।

वे ईसाई धर्म को बचाना चाहते हैं। वे इसे अमेरिका में एक व्यवहार्य, स्वस्थ, बौद्धिक धर्म बनाना चाहते हैं। और इसलिए, जो होता है वह यह है कि शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद तीन रणनीतियाँ तैयार करता है।

ये मूल रूप से बौद्धिक रणनीतियाँ हैं, लेकिन अमेरिका में ईसाई धर्म को बचाने और सभी हमलों के बावजूद अमेरिका में ईसाई धर्म को फिर से जीवित करने के लिए तीन रणनीतियाँ हैं। ठीक है, तो पहली को ऐतिहासिक प्रक्रिया को देवता बनाना कहा जाता है। ऐतिहासिक प्रक्रिया को देवता बनाना।

ठीक है, तो सबसे पहले, जब हम शब्द का उपयोग करते हैं जब हम कहते हैं कि क्या कुछ देवता है, तो हम उस शब्द का उपयोग करते समय क्या मतलब रखते हैं? कुछ देवता है। हमारा क्या मतलब है? आप शायद शब्द को देखकर बता सकते हैं, लेकिन मुझे खेद है, देवता में बनाया गया। कुछ को देवता बनाया जाता है। कुछ को ईश्वर जैसा माना जाता है।

तो, पहली रणनीति ऐतिहासिक प्रक्रिया को देवता बनाना था। दूसरे शब्दों में, अगर हम अमेरिका में ईसाई धर्म को बचाना चाहते हैं, तो आइए ऐतिहासिक प्रक्रिया को देखें और इसे अमेरिका में ईसाई धर्म को बचाने के तरीके के रूप में इस्तेमाल करें। दूसरे शब्दों में, अगर ईसाई सिर्फ़ ऐतिहासिक प्रक्रिया को समझ सकते हैं, तो वे समझ पाएंगे कि आधुनिक दुनिया में एक अच्छा ईसाई होने का क्या मतलब है।

इसलिए, हम इसे ऐतिहासिक प्रक्रिया को देवता बनाना कहते हैं। ठीक है, तो ये लोग फिर क्या उपदेश देते हैं, अब याद रखें कि वे इसे उपदेशक मंचों पर दे रहे हैं, वे इसे सेमिनारियों में पढ़ा रहे हैं, वे इसके बारे में किताबों में लिख रहे हैं, इत्यादि। वे जो सिखा रहे हैं वह यह है कि ईश्वर मुख्य रूप से इतिहास में खुद को प्रकट करता है।

यदि आप ईश्वर के बारे में जानना चाहते हैं और यदि आप एक ऐसा धर्म चाहते हैं जो एक बार फिर ईश्वर-केंद्रित हो, तो आप जानते हैं क्योंकि उन्हें लगा कि ईसाई धर्म खतरे में है। इसलिए, आपको यह समझना होगा कि ईश्वर इतिहास में खुद को प्रकट करता है। और यह कोई नई बात नहीं है क्योंकि जब आप पुराने नियम को देखते हैं, तो ईश्वर जिस तरह से खुद को प्रकट करता है, वह इसराइल के लोगों के साथ काम करने का तरीका है।

तो यह कोई नई बात नहीं है। हालाँकि, एक अर्थ में नई बात यह थी कि परमेश्वर ने खुद को इतिहास में प्रकट किया, लेकिन उसने खुद को मानवता में भी अवतरित किया। यीशु मसीह के ज़रिए नहीं बल्कि मानवता के ज़रिए।

भगवान, हम मानवता को देखते हैं, और हम मानवता में भगवान के अवतार को देखते हैं। और यह मानवता ही है जो उस इतिहास को आगे बढ़ाती है जिसमें हम भगवान को देखते हैं, जिसमें हम भगवान को समझते हैं। अब, जब मैं ऐसा कहता हूँ तो आपको पहले से ही कुछ प्रकार के प्रश्न चिह्न लगने चाहिए, लेकिन याद रखें, वे ईसाई धर्म को बचाने, ईसाई धर्म को छुड़ाने की कोशिश कर रहे हैं, और वे इसे इसी तरह करते हैं।

तो अब, ये लोग भी यीशु पर विश्वास करते हैं। उनका यीशु के बारे में एक दृष्टिकोण है, और इस बारे में कोई संदेह नहीं है। इसलिए, वे यीशु को कमतर नहीं आंकते।

वे उसे मसीह भी कहते हैं। लेकिन यीशु मसीह के बारे में महत्वपूर्ण बात यह नहीं है कि वह परमेश्वर था। यीशु के बारे में यह महत्वपूर्ण बात नहीं है।

यीशु मसीह के बारे में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वह ईश्वर के साथ, ईश्वर के साथ एकाकार थे। वह ईश्वर के साथ इतने जुड़े हुए थे। वह इतने दयालु और ईश्वर से इतने जुड़े हुए थे कि उन्होंने ईश्वरीय और ऐतिहासिक के बीच एक घनिष्ठ संबंध को मूर्त रूप दिया।

वह मसीह में आने वाले ईश्वर और इतिहास के बीच के उस अद्भुत रिश्ते का मूर्त रूप है, और वह यीशु में है। इसलिए, जब यीशु की बात आती है तो सबसे अच्छी बात जो आप कर सकते हैं वह है उसका अनुकरण करना। हमें उन लोगों के बारे में नहीं सोचना चाहिए जो अब इस तरह की शिक्षा दे रहे हैं, ऐतिहासिक प्रक्रिया को देवता बना रहे हैं, कि हमें उनके बारे में ईश्वर के रूप में नहीं सोचना चाहिए, बल्कि हमें उनके बारे में एक ऐसे इंसान के रूप में सोचना चाहिए जो ईश्वर से बहुत जुड़ा हुआ है, ईश्वर के संपर्क में है, और जिसने ऐतिहासिक प्रक्रिया को बहुत अच्छी तरह से समझा है जिसे ईश्वर अपने संसार में कार्यान्वित कर रहा है।

इसलिए, सबसे अच्छी बात जो आप कर सकते हैं वह है यीशु का अनुकरण करने का प्रयास करना। ऐसे व्यक्ति बनने का प्रयास करें जो ईश्वर के साथ बहुत अधिक जुड़ा हुआ हो और दुनिया में ईश्वर की ऐतिहासिक प्रक्रिया को समझता हो। हमें कहना चाहिए कि इन लोगों ने राज्य के बारे में भी बात की।

उन्हें राज्य की भाषा पसंद थी। राज्य की भाषा का उपयोग करना तब तक ठीक है जब तक हम राज्य को ऐतिहासिक प्रक्रिया में परमेश्वर के निरंतर अनावरण के रूप में समझते हैं।

इसलिए, आपको ईश्वर के राज्य को किसी धार्मिक तरीके से समझने की ज़रूरत नहीं है, जिसे मसीह ने स्थापित किया था। लेकिन अगर आप ईश्वर के राज्य को इतिहास में ईश्वर की ऐतिहासिक प्रक्रियाओं के विकास के रूप में समझते हैं, तो आपको इस बात की अच्छी समझ होगी कि यीशु आपको ईश्वर के राज्य के बारे में क्या सिखाने की कोशिश कर रहे थे। तो फिर से,

यहाँ बाइबिल की भाषा का इस्तेमाल किया गया है, लेकिन ईसाई धर्म को बचाने की कोशिश करने वाले इन लोगों द्वारा इसका इस्तेमाल थोड़े अलग तरीके से किया गया है।

ठीक है, ऐतिहासिक प्रक्रिया को देवता मानने के बारे में एक और बात। ये लोग बाइबल पढ़ते हैं। वे बाइबल पर विश्वास करते हैं।

वे अपनी बाइबल खोलते हैं। वे बाइबल से उपदेश देते हैं। वे बाइबल से शिक्षा देते हैं।

वे बाइबल में विश्वास करते हैं। उन्होंने बाइबल को नहीं छोड़ा है। हालाँकि, जहाँ तक उनका सवाल है, बाइबल को कभी भी किसी तरह के धार्मिक कार्य के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए।

यदि आप बाइबल की व्याख्या धार्मिक दृष्टि से कर रहे हैं, या यदि आप बाइबल की व्याख्या सैद्धांतिक दृष्टि से कर रहे हैं, तो आप व्याख्याशास्त्र के मामले में गलत रास्ते पर हैं। जब आप बाइबल खोलते हैं, तो आपको इसे एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ के रूप में पढ़ना चाहिए। आपको इसे इतिहास में काम कर रहे ईश्वर के अनावरण के रूप में पढ़ना चाहिए।

अब, इनमें से बहुत से लोगों के लिए, इतिहास में ईश्वर के काम करने का सबसे बढ़िया तरीका धार्मिक अनुभव है, और हम इसके बारे में बाद में भी बात करेंगे। धार्मिक अनुभव वह तरीका है जिसके ज़रिए आप ईश्वर को ऐतिहासिक प्रक्रिया में सबसे ज़्यादा प्रभावशाली तरीके से काम करते हुए देखते हैं। इसलिए, उन्होंने धार्मिक अनुभव पर बहुत ज़ोर दिया।

अब, याद रखें, उनके लिए धार्मिक अनुभव पाप, मुक्ति या पवित्रीकरण नहीं है। उनके लिए धार्मिक अनुभव किसी तरह ईश्वर से जुड़ना है, ठीक उसी तरह जैसे यीशु ईश्वर से जुड़े थे, अपने अंदर ईश्वर का मन होना, इत्यादि। लेकिन आप उस धार्मिक अनुभव को देखते हैं।

ठीक है, तो एक और बात, और वह यह है कि आप बाइबल नामक इस दस्तावेज़ को पढ़ने जा रहे हैं, आप इसे इतिहास को उजागर करने वाले एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ के रूप में पढ़ने जा रहे हैं, और क्या ऐसा कुछ है जो आपको अपने जीवन के संदर्भ में इससे प्राप्त करना चाहिए? और इसका उत्तर है हाँ। कुछ सिद्धांत हैं। बाइबल के संदेश में कुछ बुनियादी सिद्धांत हैं जो आपको बाइबल से प्राप्त करने चाहिए।

तो, ये सिद्धांत पूरे इतिहास में सत्य रहे हैं, और आपको उन्हें अपनी व्यक्तिगत नैतिकता और अपने सामाजिक आचार-विचार में लागू करना चाहिए। तो, एक सिद्धांत स्पष्ट रूप से प्रेम का सिद्धांत होगा। ईश्वर एक प्रेमपूर्ण ईश्वर है।

हम इसे ऐतिहासिक कथा में देखते हैं, जैसे-जैसे ऐतिहासिक कथा सामने आती है, और हमें एक-दूसरे से प्रेम करना चाहिए। इसलिए, उदाहरण के लिए, प्रेम का सिद्धांत, उत्पत्ति से लेकर प्रकाशितवाक्य की पुस्तक तक बाइबल में एक शाश्वत सिद्धांत है। इसलिए, उन सिद्धांतों को प्राप्त करें और उन्हें अपने व्यक्तिगत जीवन और सामाजिक नैतिकता पर लागू करें, और आप ठीक हो जाएँगे।

आप समझ जाएँगे कि बाइबल आपको क्या सिखाने की कोशिश कर रही है। अब, प्रगति। इन लोगों ने ऐतिहासिक प्रक्रिया को भी देवता माना; वे मानवता की प्रगति में विश्वास करते थे।

जब उन्होंने 19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी की शुरुआत को देखा, तो उन्हें लगा कि मानवता प्रगति कर रही है, बेहतर से बेहतर और बेहतर होती जा रही है। वे 20वीं सदी को ईसाई सदी के रूप में देखने की उम्मीद कर रहे थे। इसलिए, उन्होंने प्रगति देखी।

उन्होंने देखा कि 20वीं सदी महान ईसाई सदी होने जा रही है। और इसलिए, ऐतिहासिक प्रक्रिया को देवता बनाना ही सही रास्ता है। ठीक है।

हालांकि, मजेदार बात यह है कि 20वीं सदी की शुरुआत 1914 में प्रथम विश्व युद्ध से हुई थी। इसलिए, अगर आपको लगता है कि 20वीं सदी एक महान ईसाई सदी होगी, यह ईश्वर के इतिहास का एक महान प्रकटीकरण होगा, तो आप उस धर्मशास्त्र के साथ परेशानी में पड़ने वाले हैं। आप प्रथम विश्व युद्ध के बाद उस धर्मशास्त्र को बनाए रखने में सक्षम नहीं होंगे, क्योंकि प्रथम विश्व युद्ध बहुत क्रूर था और इसी तरह की अन्य बातें। हम पहले ही इस बारे में बात कर चुके हैं।

इसलिए, यह उन लोगों के लिए समस्याजनक हो जाता है जो ऐतिहासिक प्रक्रिया को देवता बनाना चाहते हैं। क्या होता है जब ऐतिहासिक प्रक्रिया न केवल भटक जाती है, बल्कि क्या होता है जब ऐतिहासिक प्रक्रिया वास्तव में, वास्तव में, वास्तव में कोरिया और वियतनाम में प्रथम विश्व युद्ध और द्वितीय विश्व युद्ध और होलोकॉस्ट के साथ गड़बड़ हो जाती है, और फिर ऐतिहासिक प्रक्रिया को देवता बनाने के आपके तरीके का क्या होता है। तो, वहाँ कुछ समस्याएँ हैं। लेकिन कई धर्मशास्त्री और कई पादरी थे जिन्होंने ऐतिहासिक प्रक्रिया को देवता बनाया, और यही रास्ता है।

अगर हम लोगों में इस तरह की सैद्धांतिक भावना भर दें, अगर हम उन्हें बाइबल पढ़ने के लिए प्रेरित कर सकें, अगर हम प्रचारकों को उस संदेश का प्रचार करने के लिए प्रेरित कर सकें, तो हम अमेरिका में ईसाई धर्म को बचा लेंगे। हम इसे फिर से व्यवहार्य बनाने जा रहे हैं क्योंकि उन्होंने इसे ऐसी चीज़ के रूप में देखा जो काफी हद तक खत्म हो चुकी थी। तो, यह पहली तरह की रणनीति या यहाँ पहली तरह की रणनीति है।

ठीक है, उस बारे में सवाल, ऐतिहासिक प्रक्रिया को देवता बनाना? हाँ, वहाँ हैं, और हम यहाँ कुछ नामों पर चर्चा करने जा रहे हैं। मैं पहले तीन पर चर्चा करूँगा, और फिर हम कुछ लोगों के नाम पर चर्चा करेंगे, जिन्होंने किसी न किसी तरह से इन रणनीतियों को आगे बढ़ाया। तो, हम कुछ लोगों से मिलेंगे।

हाँ, ठीक है, ठीक है। यह एक अच्छा सवाल है। यह एक प्रोटेस्टेंट परियोजना है क्योंकि रोमन कैथोलिक धर्म अभी भी गृहयुद्ध के बाद अपने काम को एक साथ लाने की कोशिश कर रहा है।

यह अभी भी एक अप्रवासी चर्च है। यह अभी भी खुद को मजबूत करने की कोशिश कर रहा है, और फिर हम प्रथम विश्व युद्ध और उसके बाद की घटनाओं में शामिल हो गए। यह, हाँ, वास्तव में एक प्रोटेस्टेंट परियोजना है जिसके बारे में हम यहाँ बात कर रहे हैं।

ठीक है, हाँ। हाँ, और जहाँ हम उन्हें गॉर्डन जैसी जगह पर इस्तेमाल करेंगे, उदाहरण के लिए, यह इस पर प्रतिक्रिया होगी, इस पर, पाया गया, और हम इसके बारे में बहुत बात करेंगे क्योंकि हम कट्टरवाद और इंजीलवाद के बारे में बात करते हैं। इसलिए, बाइबिल कॉलेजों और इस तरह के स्थानों की स्थापना उदारवाद की प्रतिक्रिया है जिसे अमेरिकी ईसाई धर्म को बचाने के लिए नहीं बल्कि इसे अपनी जड़ों से दूर करने के लिए माना जाता था।

तो, हम बहुत कुछ देखेंगे। हाँ। ठीक है, ठीक है।

दूसरे शब्दों में, वे एक व्यक्ति में अवतार में विश्वास नहीं करते। भगवान एक व्यक्ति में देह में नहीं आए, बल्कि भगवान, भगवान इस दुनिया में एक वास्तविक, वास्तविक मूर्त तरीके से आते हैं। इसलिए, मेरा मतलब अवतार से नहीं है जैसा कि मैं यीशु के अवतार के बारे में बात करता हूँ, भगवान का देह में आना, लेकिन मूर्त होना एक अच्छी बात होगी।

आप कैसे जानते हैं? वह कौन सा मूर्त तरीका है जिससे परमेश्वर खुद को प्रकट करता है? और मूर्त तरीका इतिहास के माध्यम से है। आप देख सकते हैं कि परमेश्वर ने पुराने नियम, नए नियम, चर्च के इतिहास और अमेरिका के इतिहास में कैसे काम किया है। मेरा मतलब है, आप देख सकते हैं, उसका पता लगा सकते हैं, और इस तरह परमेश्वर, यह एक मूर्त तरीका है जिससे आप उस तरह के अवतार के माध्यम से परमेश्वर को समझ सकते हैं।

तो, वह हर इंसान के व्यक्तित्व में देह में नहीं आ रहा है, लेकिन वह इतिहास के माध्यम से एक ठोस तरीके से आ रहा है ताकि हम इंसान यह देख सकें कि क्या हम बाइबल को सही ढंग से पढ़ रहे हैं और क्या हम सही ढंग से प्रचार कर रहे हैं और इसी तरह की अन्य बातें। कुछ और? हाँ, एमोरी। हाँ।

क्या होगा जब हम इंजीलवाद, कट्टरवाद और इंजीलवाद को साथ आते देखेंगे। इसका एक हिस्सा इन तीनों की प्रतिक्रिया है, जिनके बारे में हम बात करेंगे। और अब हमारे पास कट्टरवाद और इंजीलवाद पर आने से पहले कुछ और व्याख्यान हैं। इसलिए, क्योंकि हम ऐसा करते हैं, हम न्यू ऑर्थोडॉक्सी के बारे में बात करना चाहते हैं।

हम रौशनबुश के बारे में बात करना चाहते हैं, और इसलिए, हम इसे थोड़ा विस्तार से बता रहे हैं, लेकिन फिर हम देखेंगे कि कट्टरपंथ और इंजीलवाद इस पर कैसे प्रतिक्रिया देते हैं, लेकिन यह सही है। यह काफी हद तक उन विचारों पर प्रतिक्रिया देगा जिनका हम इन तीन आंदोलनों में उल्लेख कर रहे हैं। ऐतिहासिक प्रक्रिया को देवता बनाने के बारे में कुछ और।

ठीक है, तो इसके लिए क्या रणनीति है? यह अमेरिका में ईसाई धर्म को बचाने, इसे फिर से मजबूत बनाने की रणनीति है। तो, जैसा कि कार्टर ने उल्लेख किया, यह एक प्रोटेस्टेंट रणनीति है। मूल रूप से, इस समय रोमन कैथोलिक धर्म इसमें शामिल नहीं था।

तो, ठीक है, यह नंबर एक है। नंबर दो नैतिकता पर जोर दे रहा है, नैतिकता पर जोर दे रहा है। ठीक है, तो इन लोगों के लिए, और हाँ, वह, आप जानते हैं, यहाँ एक और बात है।

हम जिन तीन लोगों के बारे में बात करने जा रहे हैं, मैं नहीं चाहता कि आप यह सोचें कि कुछ लोग थे, आप जानते हैं, यहाँ लोगों का एक समूह था, और फिर यहाँ लोगों का एक और समूह था, और फिर एक और समूह था। ये सभी चीजें एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं। यह बचाने के लिए एक क्लासिकल लिबरल प्रोटेस्टेंट रणनीति है।

लेकिन मैं उन्हें सिर्फ़ इन तीन तरीकों से समझा रहा हूँ, इसलिए मुझे उम्मीद है कि यह आपको समझ में आएगा। तो यही एकमात्र कारण है कि मैं ऐसा कर रहा हूँ। ठीक है, क्या यह समझ में आता है? ठीक है।

ठीक है, नैतिकता पर जोर देने के लिए। ईसाई धर्म के लिए मुख्य परीक्षा, और यह लोगों के लिए लगभग एक पर्याय बन गया। जीवन, सिद्धांत नहीं।

जीवन, सिद्धांत नहीं। ईसाई धर्म जीवन के बारे में है। यह सिद्धांत के बारे में नहीं है।

यह आपके द्वारा जीए जाने वाले जीवन और आपके द्वारा जीए जाने वाले जीवन के प्रकार के बारे में है। और इसलिए, इन लोगों को लगा कि अगर हम वास्तव में इस पर जोर दें तो हम ईसाई धर्म को बचा सकते हैं और इसे वास्तव में व्यवहार्य बना सकते हैं। इसलिए, यह कोई ऐसा सिद्धांत नहीं है जिससे हम चिंतित हैं।

यह जीवन है, एक अच्छा, नैतिक, एक तरह का नैतिक जीवन जीना। तो, ठीक है, यहाँ कौन उदाहरण बनता है? बेशक, एक बार फिर, यीशु उदाहरण बन जाता है। यीशु वह व्यक्ति था जिसने परमेश्वर के साथ रिश्ते में इस तरह का जीवन जिया।

सच्चा जीवन जिस तरह से जीना चाहिए, यीशु को देखें, और फिर आपको अपना उदाहरण मिल जाएगा। ठीक है, और इसलिए यीशु, और इसलिए इन लोगों के लिए, ध्यान दें कि यीशु ने न्याय पर जोर नहीं दिया। यीशु ने प्रेम पर जोर दिया।

इसलिए, अगर आप ईसाई हैं तो प्यार से जीवन जीना ही जीवन का सार है, और न्याय करना तस्वीर से बाहर होना चाहिए। वे न्याय के बारे में घबराए हुए थे। हाँ, हेली? ठीक है।

वे यह नहीं मानते थे कि यीशु ईश्वर थे, लेकिन यह बात मूल रूप से उन तीनों के लिए सच होगी जिनके बारे में हम सामान्य रूप से बात करेंगे, कि वे मानते थे कि यीशु को ईश्वर ने भेजा था। उनके पास यीशु के बारे में एक उच्च दृष्टिकोण है और उनका ईश्वर के साथ एक विशेष संबंध था, लेकिन वे देह में ईश्वर नहीं थे। इसलिए, यीशु आपका उदाहरण बन जाते हैं।

यीशु आपके नैतिक उदाहरण, आपके नैतिक उदाहरण बन जाते हैं। तो, अब, एक चीज़ जो नैतिकता पर जोर देने वाले लोगों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, वह है ईसाई शिक्षा। ईसाई शिक्षा वास्तव में बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है।

संडे स्कूल आंदोलन, एक तरह से, इनमें से कुछ लोगों द्वारा कुछ हद तक अपने कब्जे में ले लिया गया था क्योंकि वे नैतिकता पर जोर देना चाहते थे, और अगर आप नैतिकता पर जोर देने जा रहे हैं, तो आपको लोगों को शिक्षित करना होगा। आपको लोगों को नैतिकता के बारे में प्रशिक्षित करना होगा। ठीक है, यहाँ उदाहरण मेरे अपने निजी जीवन से है, जिसका नाम मैं आपको नहीं बताऊंगा।

मैं आपको यह नहीं बताऊंगा कि चर्च कहाँ स्थित है। मैं आपको यह नहीं बताऊंगा कि यह किस संप्रदाय का है, लेकिन कई, कई साल पहले, मुझे इस चर्च में एक वयस्क संडे स्कूल समूह के लिए जॉन के सुसमाचार पर एक संडे स्कूल क्लास में जाने और एक वयस्क के लिए काम करने के लिए कहा गया था, और मुझे लगता है कि मैं चार सप्ताह, चार रविवारों तक वहाँ था। अब, मुझे यह थोड़ा अजीब लगा, और यह, ठीक है, मैं आपको तय करने देता हूँ।

मुझे यह थोड़ा अजीब लगा। हम पहले रविवार को गए थे, इसलिए जाहिर है कि मेरे पास मेरी बाइबल थी क्योंकि हम जॉन के सुसमाचार का पाठ कर रहे थे, इसलिए मुझे यह अजीब लगा। किसी के पास बाइबल नहीं थी।

किसी ने भी बाइबल लाने के बारे में नहीं सोचा। आप चर्च में बाइबल क्यों लाएंगे? मेरा मतलब है, वे इस तरह का संबंध नहीं बना रहे थे। मुझे यकीन नहीं है कि उन्होंने क्यों पूछा, लेकिन वैसे भी, यह संबंध नहीं बना रहे थे, इसलिए वे इधर-उधर भागते रहे। उन्हें चर्च में कहीं अलमारी या किसी चीज़ में छिपी हुई कुछ बाइबलें मिलीं, इसलिए उन्हें कुछ बाइबलें मिलीं, और वे कुछ हद तक देखने में सक्षम थे।

लोग देख पा रहे थे। अब, जॉन के सुसमाचार को ढूँढना एक बहुत बड़ा काम था, इसलिए मुझे, ठीक है, चलो देखते हैं कि आप किस बाइबल का उपयोग कर रहे हैं। ठीक है, चलो पृष्ठ 1009 पर चलते हैं। पहला रविवार वास्तव में कठिन था, लेकिन अब, थोड़ी देर के बाद, मुझे लगता है कि शायद हमें इसका सार मिल गया है, लेकिन मुझे यकीन नहीं है कि मुझे क्यों आमंत्रित किया गया था।

मुझे नहीं पता कि उस चर्च में बाइबल अध्ययन करने का विचार किसका था। मेरा मतलब है, आप चर्च में ऐसा क्यों करेंगे? और फिर मुझे थोड़ा अजीब लगा, मुझे लगता है कि यहाँ एक अजीब सा रोमांच था। अपने चौथे रविवार को, जब मैं समाप्त हो गया, तो मैं गलियारे से नीचे चला गया, और वहाँ बच्चों के लिए रविवार स्कूल की कक्षाएँ थीं, आप जानते हैं, अलग-अलग उम्र के और सब कुछ, और मैंने देखा कि दो या तीन कमरों में वे अभी भी चल रहे थे।

उनकी कक्षा अभी भी चल रही थी। मैंने देखा कि दो या तीन कमरों में कार्टून दिखाए जा रहे थे, जैसे कि मिकी माउस और डोनाल्ड डक और डेवी क्रॉकेट और इस तरह के अन्य कार्टून दिखाए जा रहे थे, और मैं काफी देर तक इन कार्टूनों को देख रहा था और सब कुछ, इसलिए मैंने चर्च में किसी से पूछा, अच्छा, मुझे संडे स्कूल क्लास के बारे में बताओ। खैर, हम संडे स्कूल में अपने बच्चों के साथ बाइबल का उपयोग नहीं करते हैं।

यह निषिद्ध होगा, लेकिन हम उन्हें कार्टून दिखाते हैं, और हमें लगता है कि इन कार्टूनों से, उन्हें कुछ नैतिक मूल्य मिल सकते हैं कि उन्हें अपना ईसाई जीवन कैसे जीना चाहिए, और इसलिए उन्हें लगता है कि कार्टून उन्हें बाइबिल और इसी तरह की अन्य चीजों की तुलना में ईसाई जीवन की बेहतर नैतिक समझ देते हैं, इसलिए आप नहीं करेंगे, आप रविवार स्कूल में बाइबिल का उपयोग क्यों करेंगे? मेरा मतलब है, कौन सोचेगा? तो, तो कार्टून, मैंने कहा कार्टून, तो मैं, तो मैं था, उन्होंने मुझे कभी वापस नहीं बुलाया। मैं कभी वापस नहीं गया, लेकिन यह अजीब था, मेरा मतलब है, यह मेरे अपने जीवन में एक बहुत ही अजीब तरह की घटना थी क्योंकि यह वह दुनिया नहीं है जिसमें मैं रहता हूँ, और इसलिए, लेकिन यह एक बहुत ही उदार चर्च था, और मूल रूप से, जब आप कार्टून का उपयोग कर सकते हैं तो बाइबिल का उपयोग क्यों करें? मुझे आपको एक चर्च के बारे में बताना चाहिए। क्या मुझे बताना चाहिए? मुझे अपना समय देखना है, लेकिन मुझे आपको एक चर्च के बारे में बताना चाहिए जहाँ मैं गया था।

यह एक बहुत ही दिलचस्प चर्च है। मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए, मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए, लेकिन मैं करूँगा, लेकिन मैं छात्रों को न्यूयॉर्क शहर ले जाता था। बैरिंगटन कॉलेज में जनवरी में सर्दी होती थी, इसलिए हमारे पास तीन सप्ताह होते थे।

जनवरी में, तो हमारे पास सर्दियों में तीन हफ्ते होते थे। मैं उन तीन हफ्तों के लिए छात्रों को न्यूयॉर्क शहर ले जाता था। मैं चाहता था कि वे देखें कि ग्रीनविच विलेज में एक प्रयोगात्मक चर्च कैसा है।

तो, एक रविवार को, हम उस चर्च में गए। इसे जडसन मेमोरियल चर्च कहा जाता था। और उसके बाद, मैं जडसन हूँ, वैसे, जडसन मेमोरियल चर्च।

यह एक बहुत ही दिलचस्प चर्च है। और मुझे नहीं पता था कि मेरे छात्र इस पर कैसी प्रतिक्रिया देंगे। इसलिए हमने बाद में दिलचस्प चर्चा की।

उदाहरण के लिए, एक रविवार को जब हम एक साल के लिए गए थे, पादरी ने पियानो से उपदेश दिया क्योंकि वह एक जैज पियानोवादक है। इसलिए, वह पियानो पर उपदेश देता है। और उस सुबह के सभी भजन मिकी माउस पर थे, डिज़्नी के गानों की तरह, मिकी माउस और डेवी क्रॉकेट की तरह।

वे चर्च की सुबह के भजन थे क्योंकि वह अपने पियानो से मिकी माउस धर्म के बारे में प्रचार कर रहा था। इसलिए, हमें मिकी माउस धर्म के साथ तालमेल बिठाने के लिए, जिसका वह प्रचार कर रहा था, हमने डिज़्नी के गाने गाए। इसलिए, वे चर्च के भजन थे।

तो, उन्होंने कहा कि सुबह के भजन यहीं गाए जाते हैं। तो, यह एक बहुत ही दिलचस्प प्रयोगात्मक चर्च है। और यह जडसन मेमोरियल चर्च है।

जब आप जडसन और उसके आस-पास की पृष्ठभूमि के बारे में सोचते हैं, तो यह एक जडसन मेमोरियल चर्च है, लेकिन बहुत प्रयोगात्मक है। तो, एक और बार, हम एक और साल के लिए वहाँ थे, लेकिन यह चर्च में कम्युनियन था। यह चर्च में कम्युनियन का समय है।

तो, मुझे लगा कि यह दिलचस्प होने वाला है। मुझे आश्चर्य है कि वे क्या करने जा रहे थे। आप कह सकते हैं कि वे अधिक उदारवादी हैं।

संस्कार के लिए कोका-कोला और आलू के चिप्स थे। इसलिए, उन्होंने आलू के चिप्स और फिर कोका-कोला वगैरह बांटे। इसलिए जडसन मेमोरियल चर्च बहुत दिलचस्प है।

तो आप समझ सकते हैं, इसका किसी भी चीज़ से कोई लेना-देना नहीं है। इसलिए मैं व्याख्यान देने जा रहा हूँ, वास्तव में फिर से व्याख्यान देने जा रहा हूँ, लेकिन इसने मुझे उस दूसरे चर्च में जाने की याद दिला दी। और फिर मैं जडसन मेमोरियल चर्च गया हूँ।

और इसलिए आप वहां कुछ दिलचस्प, अजीब और अद्भुत घटनाएं देख सकते हैं। लेकिन किसी भी मामले में, यह नैतिकता पर जोर देने पर वापस जाता है। ठीक है, तो यही है जो ये लोग करते हैं, नैतिकता पर जोर देते हैं।

ठीक है, अब इनमें से कुछ लोग थे, अब हम कुछ नामों पर चर्चा करेंगे। कुछ लोग ऐसे थे जो वास्तव में व्यक्तिगत नैतिकता और कभी-कभी स्वास्थ्य और धन के बारे में बात करते थे, लेकिन वे धार्मिक रूप से अधिक जुड़े हुए थे। तो वे नहीं थे; वे लोग थे जो धार्मिक रूप से अधिक जड़ थे, लेकिन कुछ पाठ्यपुस्तकें अभी भी उन्हें उदार परंपरा में होने के रूप में संदर्भित करती हैं।

लेकिन मैं आपको बताना चाहता हूँ कि वे उन अतिशयोक्तियों से कहीं ज़्यादा धार्मिक रूप से निहित हैं जिनके बारे में हम बात कर रहे हैं। मैं उनमें से चार का ज़िक्र करना चाहूँगा। पहले दो ने, कभी-कभी, सुसमाचार के व्यक्तिवाद पर ज़ोर दिया।

कभी-कभी, वे लगभग स्वास्थ्य और धन के सुसमाचार पर जोर देते थे। वे जोएल ओस्टीन नहीं थे, लेकिन वे कभी-कभी स्वास्थ्य और धन के सुसमाचार पर जोर देते थे। और उनमें से दो जो सबसे प्रसिद्ध हैं, वे हेनरी वार्ड बीचर थे और ये उनके साथी हैं।

और फिर ट्रिनिटी चर्च में फिलिप्स ब्रूक्स। अपनी दूसरी फील्ड ट्रिप पर, हम ट्रिनिटी चर्च गए और फिलिप्स ब्रूक्स के चर्च को देखा। अब, हम दोहराना चाहते हैं कि ये लोग उदारवादी परंपरा में अधिक हो सकते हैं, लेकिन वे उससे कहीं अधिक जमीनी स्तर पर थे जिसके बारे में हम बात कर रहे हैं।

वे धर्मग्रंथों, ईश्वर में मसीह, त्रिदेव, इत्यादि पर आधारित थे। लेकिन वे उदारवादी परंपरा में थोड़े अधिक विश्वास रखने वाले लोग थे। कभी-कभी, अपने उपदेशों में, वे नैतिकता पर जोर देते थे, लेकिन उनका मानना था कि यीशु ईश्वर थे।

वे त्रिदेवों और अन्य बातों में विश्वास करते थे। लेकिन ये दो नाम हैं जिन पर आपको ध्यान देना चाहिए। दो अन्य नाम जिन पर आपको ध्यान देना चाहिए वे हैं वाशिंगटन ग्लैडेन और वाल्टर रौशनबुश।

मैं अभी आपके साथ हूँ, कार्टर। वाशिंगटन ग्लैडेन और वाल्टर रौशनबुश। अब आपने रौशनबुश की जीवनी पढ़ ली है।

आपने शायद इसे अब तक दो या तीन बार पढ़ा होगा क्योंकि आपके पास इसे पढ़ने के लिए पहले दिन से ही समय था। इसलिए, यदि आप सप्ताह में एक अध्याय पढ़ रहे हैं, तो आपने इसे संभवतः तीन बार पढ़ा होगा। ये दोनों ही उस पुस्तक के संस्थापक थे जिसे सामाजिक सुसमाचार के रूप में जाना जाता है।

अब, सामाजिक, लेकिन ये दोनों लोग धर्मशास्त्रीय रूप से भी अच्छी तरह से स्थापित हैं, त्रिदेव और अवतार, और इसी तरह के अन्य मामलों में अच्छी तरह से स्थापित हैं, और वास्तव में, जैसा कि हम रौशनबुश पर व्याख्यान देते समय जोर देंगे और आपकी पुस्तक जोर देती है, रौशनबुश को भी एक इंजीलवादी माना जाएगा, यह एक ऐसा लेबल है जिसे आपकी पुस्तक के लेखक ने रौशनबुश के लिए उपयोग किया है। हालाँकि, मैं ग्लैडेन और रौशनबुश का उपयोग ऐसे लोगों के रूप में कर रहा हूँ जिनके पास सुसमाचार के सामाजिक भाग पर जोर देने की उदार प्रवृत्ति है, इसलिए नैतिकता पर इस तरह का जोर यहीं जाता है। यह नैतिकता के व्यक्तिगत तनाव में जा सकता है जैसा कि बीचर और ब्रूक्स के साथ कई बार हुआ था, या यह नैतिकता के सामाजिक तनाव में जा सकता है जैसा कि ग्लैडेन और रौशनबुश के साथ कई बार हुआ था। इसलिए, नैतिकता पर यह जोर उन दो दिशाओं में से किसी एक में जा सकता है।

ठीक है, मैंने यहाँ कार्टर का हाथ देखा, इसलिए नैतिकता पर जोर देते हुए, हाँ। ठीक है, वह था, आप हेनरी वार्ड बीचर के बारे में बात कर रहे हैं, वह था, ठीक है, उसके पिता लियोनार्ड बीचर थे, लेकिन वह है, नहीं, वह व्यक्तिवाद है कि वह, उन्होंने कभी-कभी जोर दिया, वह आलोचना के घेरे में आ सकता है, लेकिन ये सुंदर हैं, ये चार लोग निश्चित रूप से रूढ़िवादी ईसाई धर्म के दायरे में हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है। ठीक है, तो वह, नंबर तीन, मुझे यहाँ वापस जाने दो, नंबर तीन, ठीक है, तीसरा, और धार्मिक भावना की केंद्रीयता, धार्मिक भावना की केंद्रीयता, एक तीसरा तरीका जिससे अमेरिका में ईसाई धर्म को भुनाया जा सकता है।

ठीक है, तो इसे लिख लें। यह आपके पाठ्यक्रम में भी है, धार्मिक भावना की केंद्रीयता। ओह, ठीक है। अब, हम धार्मिक भावना की केंद्रीयता को कभी नहीं समझ पाएंगे जब तक कि हम फ्रेडरिक श्लेयरमेकर को नहीं समझ लेते, इसलिए मुझे चर्च के इतिहास और धर्मशास्त्र के इतिहास के बारे में थोड़ा-बहुत बताना होगा, और वह फ्रेडरिक श्लेयरमेकर के साथ है, और यहाँ फ्रेडरिक श्लेयरमेकर की तस्वीर है। ठीक है, फ्रेडरिक श्लेयरमेकर, आप में से बहुतों ने सुना होगा। इस कोर्स के शुरू होने से पहले, आपने जोनाथन एडवर्ड्स और जॉन कैल्विन के बारे में सुना था। आप में से कितने लोगों ने आज से पहले फ्रेडरिक श्लेयरमेकर के बारे में सुना है? कोई भी, एक, दो, तीन, चार, शायद चार लोग, पाँच।

ठीक है, फ्रेडरिक श्लेयरमेकर, चलो उसे एक शीर्षक देते हैं, बस एक, बस उसे कहीं जगह देते हैं। कभी-कभी उन्हें उदार धर्मशास्त्र का पिता कहा जाता है, फ्रेडरिक श्लेयरमेकर ठीक है, फ्रेडरिक श्लेयरमेकर एक जर्मन धर्मशास्त्री थे, और वह एक जर्मन धर्मशास्त्री थे जो जर्मनी में उसी संकट का सामना कर रहे थे जिसका सामना अमेरिका में लोग कर रहे थे जो इन रणनीतियों

को विकसित कर रहे थे, लेकिन वह, आप जानते हैं, यहाँ थोड़ा पहले, ये श्लेयरमेकर की तिथियाँ हैं। ठीक है, तो श्लेयरमेकर किस संकट का सामना कर रहे हैं? वह इस संकट का सामना कर रहे हैं कि ईसाई धर्म और बाइबिल पुराने हो गए हैं।

अब किसी को इसकी ज़रूरत नहीं है, आपका बहुत-बहुत शुक्रिया। शायद हमें इसकी ज़रूरत थी, लेकिन अब हमें इसकी ज़रूरत नहीं है। उस समय जर्मनी में वह इसी संकट का सामना कर रहा था।

इसलिए, श्लेयरमाकर को लगता है कि भगवान ने उन्हें उन लोगों की सेवा करने के लिए बुलाया है जिन्हें उन्होंने धर्म का सांस्कृतिक तिरस्कार करने वाला कहा है। इसलिए, वह धर्म के सांस्कृतिक तिरस्कार करने वालों की सेवा करते हैं। दूसरे शब्दों में, वह ऊपर और बाहर के लोगों की सेवा करते हैं।

वह जर्मन समाज में धनी, प्रभावशाली और शक्तिशाली लोगों की सेवा करते हैं ताकि उन्हें यह समझने में मदद मिल सके कि ईसाई धर्म उनके जीवन के लिए प्रासंगिक है। दूसरे शब्दों में, वह जर्मनी में ईसाई धर्म को बचाने की कोशिश कर रहे हैं, ठीक वैसे ही जैसे हम जिन लोगों के बारे में बात कर रहे हैं वे अमेरिका में इसे बचाने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन वह थोड़ा पहले आते हैं। इसलिए उन्हें ईसाई उदारवाद का जनक कहा जाता है।

ठीक है, तो अब, जब भी मैं श्लेयरमाकर के बारे में बात करता हूँ, तो मेरे पास हमेशा एक लंबा उपदेश होता है, इसलिए मैं अपने लंबे उपदेश को छोटा करने जा रहा हूँ क्योंकि मेरे पास समय नहीं है। आप में से कुछ लोग गरीबों की सेवा करने जा रहे हैं, और यह अद्भुत है... ईश्वर आपको जो भी मंत्रालय देता है, जिस भी व्यवसाय में वह आपको ले जाता है, आप गरीबों, हाशिए पर पड़े लोगों, असहायों, बेघरों और इसी तरह के लोगों से निपटेंगे। मेरा मतलब है, आप में से कुछ लोगों के पास निस्संदेह उस तरह की सेवा होगी।

यह एक अद्भुत बात है। हालाँकि, आप में से कुछ लोगों को भगवान द्वारा समाज में धनी, प्रभावशाली, शक्तिशाली लोगों की सेवा करने के लिए बुलाया जा सकता है, जैसे श्लेयरमेकर को बुलाया गया था। उन्हें लगा कि यह उनका बुलावा था।

यह एक वैध आह्वान है। धर्म के सांस्कृतिक तिरस्कार करने वालों की सेवा करना एक वैध आह्वान है। और आपमें से कुछ लोगों को ईश्वर आपके व्यवसाय के माध्यम से जीवन में ऐसे स्थान पर रख सकता है; यही आप करने जा रहे हैं।

लेकिन यह एक आह्वान है, और आपको उस आह्वान का पालन करना होगा। इसलिए, मेरे पास बहुत सारे उदाहरण हैं जिनका मैं इसमें उपयोग कर सकता हूँ, लेकिन हमारे पास इसके लिए समय नहीं है। लेकिन वैसे भी, फ्रेडरिक श्लेयरमाकर ने उन लोगों की सेवा की जिन्हें उन्होंने धर्म का सांस्कृतिक तिरस्कार करने वाला कहा था।

अब, उन्होंने ऐसा क्या किया जो दूसरे लोग इस तीसरे तरीके से करना शुरू कर रहे हैं? उन्होंने जो किया वह धार्मिक भावना, धार्मिक भावना और ईश्वर के प्रति धार्मिक लगाव पर जोर देना था।

उन्होंने इसी पर जोर दिया: इन सांस्कृतिक तिरस्कार करने वालों को ईसाई धर्म में वापस लाना। इसलिए, श्लेयरमेकर और जो लोग धार्मिक भावना की केंद्रीयता पर जोर देते हैं, श्लेयरमेकर और अमेरिका में ऐसा करने वाले लोगों ने हठधर्मिता, सिद्धांत और धर्मशास्त्र को कम महत्व दिया।

उन्होंने वास्तव में इसे कम महत्व दिया, और वे किसी भी चीज़ पर बाइबल की किसी भी तरह की शाब्दिक व्याख्या नहीं चाहते थे। वे बाइबल को केवल एक ऐसी पुस्तक के रूप में समझना चाहते थे जो हमें ईश्वर के साथ हमारे रिश्ते को समझने में मदद करती है। इसलिए, हठधर्मिता बाहर है।

सिद्धांत बाहर है। धर्मशास्त्र बाहर है। बाइबल की शाब्दिक व्याख्या बाहर है।

धार्मिक भावना अंदर है। और इसलिए यह श्लेयरमाकर के लिए और फिर अमेरिका में लोगों के लिए जब आप इसे अमेरिका में लाते हैं, तो यह दिल का धर्म बन जाता है। अब, इसलिए, व्यापक संस्कृति में क्या होता है, और मैं इसके साथ समाप्त करूँगा।

हमें अपनी परीक्षाएं फिर से शुरू करने के लिए थोड़ा जल्दी बंद करने की जरूरत है। लेकिन इसलिए, व्यापक संस्कृति में जो होता है, जहां तक श्लेयरमेकर का संबंध है और अमेरिका के लोगों का संबंध है, वह यह है कि हम विज्ञान को अपना काम करने की अनुमति दे सकते हैं। हम शिक्षा को अपना काम करने की अनुमति दे सकते हैं।

हम कला को अपना काम करने दे सकते हैं। हम गणित को अपना काम करने दे सकते हैं। क्योंकि यह एक और क्षेत्र है जिसमें ईश्वर काम कर रहा है।

लेकिन धार्मिक क्षेत्र जिसमें ईश्वर काम करता है वह हृदय में है और व्यक्ति के धार्मिक अनुभव में है। इसलिए, जहाँ तक इन लोगों का सवाल है, धर्म और विज्ञान के बीच कोई प्रतिस्पर्धा नहीं है। धर्म और कला के बीच कोई प्रतिस्पर्धा नहीं है।

धर्म और शिक्षा के बीच कोई प्रतिस्पर्धा नहीं है। हम उन चीजों को पनपने दे सकते हैं, और हमें यह महसूस नहीं करना चाहिए कि हमें व्यापक संस्कृति में उनके साथ प्रतिस्पर्धा करने की आवश्यकता है। इसलिए, यह दिल का धर्म बन जाता है और ईसाई धर्म को बचाने का एक तरीका बन जाता है, लोगों को यह विश्वास दिलाता है कि ईश्वर चाहता है कि आप उसके साथ धार्मिक भावना रखें।

और अब श्लेयरमेकर के लिए, जो इसका एक महान मॉडल बन जाता है, फिर श्लेयरमेकर के लिए, उस व्यक्ति का महान मॉडल जो हर समय, लगातार, लगातार ईश्वर के संपर्क में रहता है, महान मॉडल यीशु बन जाता है। बेशक, यीशु एक ऐसे व्यक्ति का महान मॉडल बन गया जो अपने जीवन में पूरी तरह से ईश्वर पर निर्भर है। तो, तीन रणनीतियाँ हैं।

शुक्रवार को जब हम मिलेंगे तो युद्ध की रेखा में उतरने से पहले हमारे मन में इनके बारे में कुछ सवाल हो सकते हैं। इसलिए, मैं यहीं रुकता हूँ।

यह डॉ. रोजर ग्रीन हैं जो अमेरिकी ईसाई धर्म पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 18 है, अमेरिका में उदार धर्मशास्त्र।